ISSN: 2278-4632
Vol-11 Issue-01 2021

उपन्यास 'आवर्तन' का संक्षिप्त अवलोकन

सईदा मेहराज

पीएच.डी. शोध छात्रा, कश्मीर विश्वविद्यालय. Pin :190006

कमल कुमार का जन्म अम्बाला (हरियाणा) में हुआ है | आपने बी .ए .अर्थशास्त्र ऑनर्स, एम.ए .(हिंदी),पंजाब विश्वविध्यालय ,एम .फिल और पी–एच.डी .दिल्ली विश्वविध्यालय से किया | आपने अपने जीवन में साहित्य की कई विधाओं पर जैसे :- कविता संग्रह (बयान १९८१ ,गवाह १९९०,साक्षी हैं हम १९९९,सूर्य देता है मन्त्र २००५), कहानी संग्रह (पहचान १९८५,फिर वहीं से शुरू१९९८ , वैलंटाईन डे२००२, पूर्णविराम२००५, घर बेघर २००७), उपन्यस (अपार्थ १९८६, आवर्तन १९९२, हैमबर्गर१९९६,यह खबर नहीं २००२, मैं घूमर नाचुहूँ २००९, पासवर्ड २००९), आलोचना (नयी कविता की परम्परा और भूमिका,अज्ञय की काव्य संवेदना १९८८, शान्ति प्रिय द्विवेदी–व्यक्तित्व एवं कृतित्व१९९२,कथा अंतरकथा१९८५),आदि पर अपनी लेखनी चलाई |

यह शोध लेख उपन्यास पर होने के कारण हम पहले उनके उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय दे रहे है | उनका प्रथम उपन्यास 'अपार्थ' है, इस उपन्यास का नायक अशोक एक सरकारी दफ्तर में क्लर्क तो है किंतु अपनी बीमारी के कारण स्वभाव से कुछ अलग–थलग सा था इसी कारण उनकी पत्नी उनकी बीमारी से ऊब कर दो बच्चों को छोड़ कर पति के बॉस के साथ भाग जाती है इस तरह लेखिका ने मध्यवर्गीय समाज के जीवन को दर्शाया है | ' हैम्बरगर' में पंजाब के एक मध्यवर्गीय परिवार की लड़की के संघर्ष की कथा है जिसमें रती की शादी कुलवीर से तय होती है किंतु कुलवीर शादी से पहले ही रती से शारीरिक सम्बन्ध बना लेता है और बाद में रती तथा उसके होने वाले बच्चे को भी स्वीकार नहीं करता | 'यह खबर नहीं' उपन्यास में लेखिका ने आज की लोकतांत्रिक व्यवस्था के अमानवीय चेहरे को बेनकाब किया है कि किस प्रकार देश के अधिकारियों द्वारा सच का गला घोंटा जा रहा है | महिलाओं के अधिकारों का समर्थन करने वाली संसद अपनी ही बहू के साथ होने वाले अत्याचार पर मौन रहती है | उदहारण : बलात्कार की रिपोर्ट ना देने वाले डाक्टर की हत्या कर दी जाती है और देखते ही देखते हत्यारा मंत्री बन जाता है |

'**आवर्तन**' कमल कुमार का दूसरा उपन्यास है जिसका प्रकाशन सन् (१९९२) में हुआ हैं | आलोच्य उपन्यास का नायक अमर विश्विद्यालय में हिंदी प्रवक्ता है| एक विवाहित पुरुष होते हुए भी वह अपने जीवन में पत्नी के अतिरिक्त और दो महिलाओं के सम्पर्क में

Copyright @ 2021 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-11 Issue-01 2021

आता है | 'पार्वती' जो दो बच्चों की माँ भी हैं उसमें वह ऊष्मा नहीं थी , जो पुरुष को सम्मोहित किये रहती है | पार्वती के साथ रहना अमर को कर्तव्यबोध से प्रेरित एक प्रक्रिया से गुजरना था | अपनी अतृप्त वासना से जितना कुंठित होता पार्वती उतनी ही घर में , बच्चों में व्यस्त रहती थी उन दोनों की यह अलग - अलग मानसिकता ही दोनों के बीच एक दीवार बन कर रह जाती है , जीवन की एकरसता से ऊबा अमर अपने को अतृप्त अनुभव करता था |जिसके कारण वह मीरा रामचंद्रन के प्रति मोहित होता है | मीरा रामचंद्रन भारतीय और पाशचात्य समाज व संस्कृति के तुलनात्मक अध्ययन के लिए अमेरिका से भारत आई थी | अमर मीरा का गाईड था , उसे उसके साथ सुख मिलता है किंतु मीरा अनैतिक शारीरिक सम्बन्ध को गल्त मानती है | उसके आकर्षण से विवश अमर ने उसे शारीरिक स्तर पर पाना चाहा, किंतु उसने उसे दुत्कार दिया | मीरा के कठोर सिद्धांतों के सामने अमर असफल होता है | उसके पश्चात तीसरी नारी अमर की रिश्ते की भांजी मिनाली जिस के साथ अमर शारीरिक सम्बन्ध भी स्थापित करता है परंतु अंत में अमर पश्चाताप करके अपनी पत्नी के पास वापस लोट जाता है उदहारणत: "मीरा द्वारा खंडित और पार्वती द्वारा दंडित उसके अवचेतन में एक भूख भयंकर और गहरी खोह की तरह खुली थी | अवसर मिलते ही वह अपने शिकार को खिंच ले गयी थी | पार्वती से अतृप्त और मीरा से प्रताड़ित अमर ने रिश्ते की मर्यादा तोड़ कर मिनाली को अपनी वासना की तृप्ति का माध्यम बना लिया |उसे होश तब आता है जब मिनाली गर्भवती हो जाती है |गर्भ मुक्ति के लिए वह किसी तरह मृत्यु के मुख में जाते जाते बची , पश्चाताप की आग में झुलसते हुए अमर को अंततः पार्वती की याद आई | उसने उसका त्याग और समर्पण समझा और उसकी ओर लोट पड़ा|" 1

लेखिका ने इस उपन्यास में समाज में नारी के महत्व को उजागर करने का सफल प्रयास किया है | "विदेशी माता के शरीर और भारतीय पिता की आत्मा को प्राप्त करने वाली मीरा रामचंद्रन इस उपन्यास की प्राण- नाड़ी है और इस नाड़ी को केवल नारी समझने में अमर अपनी मर्त्य भूल करता है इस भूल को पार्वती अंततः सुधार लेती है |" 2 कुल मिलाकर इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने तीन प्रकार के नारी चरित्रों को उभरा है : पत्नी जिसको पति से ज्यादा बच्चों के प्रति झुकाव है ,दूसरी स्त्री मीरा रामचंद्रन अनैतिक सम्बन्ध तो दूर स्त्री –पुरुष प्रेम के पक्ष में भी नही होती है और तीसरी नारी प्रेम के अतिरिक्त शारीरिक संबंधों को भी स्वीकारती है | " अमर की पत्नी पार्वती का उसके जीवन में पुन: आना यही आवर्तन और प्रत्यावर्तन इस उपन्यास का सत्य हैं जिसमें भारतीय संस्कृति का व्यवहारिक, वैचारिक और प्रासंगिक चित्र पाठकों के सामने प्रस्तुत

Copyright @ 2021 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-11 Issue-01 2021

होता हैं | लेखिका ने यह स्पष्ट करना चाहा है कि भारतीय जीवन शैली के अनुसार मर्यादित पति -पत्नी सम्बन्ध ही जीवन में सुख शांति का विधान करने वाला है|"3

आलोच्य उपन्यास में अपने आप को अतृप्त अनुभव करने वाला अमर अपनी पत्नी तथा परिवार से ऊब गया था | जिसके परिणामस्वरूप वह अपने बच्चों तथा परिवार के प्रति कोई सहानुभूति प्रस्तुत नहीं करता , बेटे के बीमार होने पर अमर की लापरवाही बच्चे की मृत्यु का कारण बन जाती है | पार्वती अपनी संतान की उपेक्षा अपने ही पति द्वारा सहन नहीं कर पाती| माँ सब सह सकती है किंतु अपनी संतान की उपेक्षा सहन नहीं कर पाती | पार्वती अपनी संतान के अवसान को देखकर अपने भविष्य की परवा न करते हुए बच्चों समेत घर छोड़ कर चली जाती है | इस उपन्यास में मिनाली के माध्यम से लेखिका ने उन नारियों तक यह बात पहुँचाने का प्रयास किया है जो स्वार्थी पुरुषों के चुंगल में फंस जाती है किंतु यहाँ मिनाली एक उदाहरण बन कर हमारे समक्ष है | अमर मिनाली को अपने जाल में फंसाकर उसका जीवन बरबाद करने पर तुला रहता है | जब मिनाली को अमर अपने प्यार का पूरा पूरा आश्वासन देने का प्रयत्न करता है किंतु मिनाली उसकी पत्नी पार्वती के बारे में पूछ कर अमर को यह आभास दिलाती है कि उसके नाम से एक नारी जुडी है जो दो बच्चों की माँ भी है और अंतत: मिनाली अपना गाँव वापस चली जाती है | इस प्रकार कमल कुमार एक ऐसी महिला पात्र को अपने उपन्यास में स्थान देती है जिसने समाज की सभी नारियों को इस बात पर सोचने के लिए विवश किया है कि स्वार्थी एवं नारी लोलुप पुरुषों को समाज के समक्ष लाकर साधारण महिलाओं को जागरूक रहना चाहिए |

लेखिका ने वृद्ध समस्या पर भी अपनी लेखनी चलाई है कि आज हम वृद्धों को घर से निकलते है जिसके करण घर और समाज का संतुलन बिगड़ गया है | एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी से कटती जा रही है जो सही नहीं है क्योंकि अगर बच्चे वृद्ध अवस्था में अपने माता–पिता की सेवा नहीं करेंगे तो उनके ऋण से मुक्त नहीं हो पायेंगे इसके अतिरिक्त लेखिका ने परिवर्तन को भी अपने उपन्यास में महत्वपूर्ण स्थान दिया है जिस प्रकार सुमित्रानंदन पन्त की 'परिवर्तन' कविता में प्रकृति को नित्य परिवर्तनशील कहा गया है कि परिवर्तन ही समाज का नियम है यहाँ कुछ भी स्थिर नहीं रहता | उसी प्रकार आपने भी प्रकृति को जीवन से जोड़ने का सफल प्रयास किया है | "प्रकृति हमें जीवन में शिक्षा देने वाली गुरु समान हैं पतझड़ परिवर्तन का नियम सिखाता और वसंत जिन्दगी में उल्लास और उत्साह भरता है |" 4 लेकिन आज का जीवन बदल गया है माँ अपने बेटे पर भारी पड़ रही हैं और 'ओल्डहोम' खोलने की सोच को आधुनिकता के साथ जोड़ा गया है | जहाँ एक ओर लेखिका ने प्रकृति को जीवन के साथ जोड़ा है वहीं आयुर्वेद,

Copyright @ 2021 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-11 Issue-01 2021

जडीबुटियों आदि के महत्व को उजागर करते हुए इस बात की ओर भी संकेत किया है कि इस पृथ्वी पर रहने वाले जीवों को प्रकृति माँ जलवायु के अनुरूप वहां की वनस्पति में ही रोगों के उपचार के लिए ओषधियाँ उपजति है | जब प्रकृति और हमारे बीच संतुलन बिगड़ता है तो हम बीमार हो जाते हैं | इसलिए प्रकृति की सेवा करना हमारा परम कर्तव्य है | इस के अतिरिक्त भाषा के प्रति ध्यान दे तो "भाषा की दृष्टि से भी इस उपन्यास में एक सांस्कृतिक संगम दिखाई देता है |

अमर की पत्नी पार्वती हिन्दी का शुद्ध क्षेत्रीय रूप बांगडी बोलती है | जबकि विदेश से आई मीरा रामचन्द्रन अंग्रेज़ी से प्रभावित हिन्दी बोलती है | शेष सभी पात्र बोलचाल की हिंदी बोलते हैं | इस सूत्र के निर्वाह में लेखिका इस तथ्य की ओर भी आधुनिक समाज को सतर्क करने का सफल प्रयास करती है कि व्यक्ति को व्यक्तित्व प्रदान करने वाली भाषा के प्रति किसी प्रकार की हीन भावना को प्रश्रय देना एक सांस्कृतिक अपराध हैं | भाषा का सम्मान व्यक्ति का सम्मान है, उस व्यक्ति के समस्त परिवेश का सम्मान है | यह इस उपन्यास की प्रासंगिक, किंतु प्रशस्त उपलब्धी हैं |"[5]

ग्रन्थ सूची:

1:कुमार ,कमल, *"आवर्तन"*, प्रकाशक: पब्लिशिंग हॉउस, प्रथम संस्करण , १९९२,पृ. १

2: कुमार, कमल, *"आवर्तन"*, प्रकाशक: पब्लिशिंग हॉउस, प्रथम संस्करण,१९९२,भूमिका से |

3:तिवारी,डॉ रामचन्द्र , *"हिन्दी का गद्य साहित्य'*, विश्वविद्यालय प्रकाशन, नवम

संस्करण, २०१४, पृ: २७१ |

4:कुमार ,कमल , *"आवर्तन"*, प्रकाशक: पब्लिशिंग हॉउस, प्रथम संस्करण ,१९९२,पृ:८३ |

5:कुमार ,कमल , *"आवर्तन"*, प्रकाशक : पब्लिशिंग हॉउस ,प्रथम संस्करण ,१९९२,भूमिका से |

Copyright @ 2021 Authors